आपके पत्र

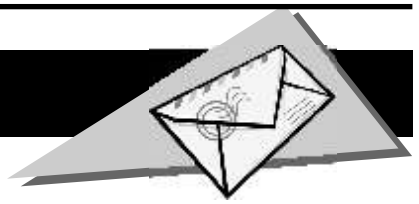

संपादक महोदय,

मैं मधुमेह वाणी का नियमित पाठक हूँ। वास्तव में यह पत्रिका पढ़कर मुझे मधुमेह से लड़ने हेतु विश्वास जागा। मैं एक निवेदन करना चाहता हूँ कि मधुमेह पीड़ितों की इच्छाओं और भावनाओं को ध्यान में रखते हुए, यदि भोपाल में एक डायबिटिक जोन करके क्षेत्र स्थापित किया जाए जिसमें सभी तरह के खाद्य पदार्थ, व्यायाम हेतु यंत्र और रीजनेबल शुगर–फ्री मिठाई आदि जिनकी खाने की अनुमति हो उपलब्ध कराई जाए।

मैं डाक्टर साहब से निवेदन करुँगा कि इस ओर कुछ समय निकाल कर उचित कदम उठाए जाएँ।

धन्यवाद

प्रदीप कुमार, भोपाल

★ ★ ★

प्रिय डॉ. जिंदल,

सर्वप्रथम आपको शुभकामनायें – एक नहीं दो–दो कि आप मधुमेहियों की जागरुकता के लिये ''मधुमेह वाणी'' जैसा सार्थक प्रयास कर रहे हैं, दूसरा आपके बच्चों के लिये (टाईप–1) इतनी अच्छी पिकनिक का आयोजन किया। दीपिका नरवरे ने सचमुच बहुत अच्छा लिखा – ऐसा लगा मानो हम भी अपनी टाईप–1 टीम के साथ पिकनिक पहुँच गये हैं। कई बार इस तरह के आयोजनों में हम लोगों को बुलाते हैं, तो लोगों का (विशेष रूप से अभिभावकों) का सपाट सा जवाब होता है–हमारी बच्ची/बच्चा ठीक है–वहाँ जाकर उसको क्या फायदा होगा। अब अगर फायदे की ही बात करें तो जैसा मेरा अनुभव है – जो भी व्यक्ति इस तरह के कार्यक्रमों में आते हैं उनके आत्मविश्वास में जबर्दस्त बढ़ोतरी होती है। बस फिर क्या एक बार यदि टाईप–1 फ्रेंड और उसके परिवार को लग गया कि वह जीवन में कुछ भी कर सकता है तो काम बन गया। वह शुगर नियंत्रण के लिये अधिक प्रयास करने लगता है, अपनी पढ़ाई पर अधिक ध्यान देता है और अपने जीवन में अपने सपनों को सार्थक कर पाता है।

डॉ. जिन्दल ऐसे प्रयासों के लिये आप बधाई एवं प्रशंसा के पात्र हैं।

शुभकामनाओं सहित,
डॉ. ऋषि शुक्ला
D.M. (Endocrinology)
कानपुर

★ ★ ★

संपादक महोदय,

हृदय रोग पर आपका अंक बहुत पसंद आया। इतनी वैज्ञानिक जानकारी एक साथ देकर आपने कई मरीज़ों का भला किया है। डॉ. त्रिवेदी ने इंटरव्यू में हृदय रोग पर विश्वसनीय जानकारी प्रस्तुत की है। वे बधाई के पात्र हैं। बच्चों की पिकनिक पर दीपिका ने बड़ा बढ़िया लिखा है। आपकी टीम इतने अच्छे कार्य कर रही है यह दूसरों के लिये प्रेरणादायक होगा।

– सिमरन कौर, जबलपुर

★ ★ ★

संपादक महोदय,

आपकी पत्रिका के कुछ और पढ़ने की मिले। यह जानकर आश्चर्य हुआ कि यह पत्रिका तीन सालों से

प्रकाशित हो रही है। आप पत्रिका के प्रचार–प्रसार पर ध्यान दें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपकी ''मधुमेह वाणी'' हिन्दी मधुमेही मरीज़ों की चहेती पत्रिका बन जायेगी। मैंने तो इतनी अच्छी जानकारी किसी पत्रिका या साहित्य में मधुमेह पर नहीं देखी। आप इसे निरंतर जारी रखें।

– इकबाल सिंह राठौर, इंदौर

★ ★ ★

संपादक जी,

आपने बच्चों की पिकनिक कर बहुत बड़ा पुण्य का कार्य किया। यह सोचकर ही मन भर आता है कि इतने छोटे बच्चे सुबह–शाम सुई लगायें, मीठा न खा पायें। हम इन बच्चों की पीड़ा और इनके माँ–बाप का गम कभी समझ न पायेंगे। इनका मिलना–जुलना व कुछ पल हँसी–खुशी के बिताना उन्हें कितना सुकून देता होगा यह सोचकर अच्छा लगता है। आप बधाई के पात्र हैं। बच्ची दीपिका का पिकनिक का वर्णन बड़ा मार्मिक था।

– राजकुमार पाटीदार, होशंगाबाद

★ ★ ★

संपादक जी,

पिछले अंक की जितनी तारीफ करें कम है। भरोसेमंद व वैज्ञानिक जानकारी जितने अच्छे से आप प्रस्तुत करते हैं उसका कोई सानी नहीं। मैंने कई बार लिपिड प्रोफाईल टेस्ट करवाया होगा। पहली बार इतनी अच्छी जानकारी इस टेस्ट पर मिली। वैज्ञानिक जानकारी को इतनी सरल भाषा में समझाना एक बड़ी कला है। आपको साधुवाद।

– सचिन चन्द्र नागपाल, भोपाल

★ ★ ★

संपादक महोदय,

आपका हृदयरोग 'विशेषांक' बहुत पसंद आया। मैंने अपना बायपास ऑपरेशन करवाया हुआ है। मैं ऑपरेशन के बाद की तकलीफों को जानता हूँ। डॉ. हरिहर त्रिवेदी जी ने जो पुनर्वास पर लेख लिखा है वो निश्चित ही तारीफ के क़ाबिल है। क्या हमारे अस्पताल ऐसा अलग विभाग नहीं बना सकते जो ऑपरेशन के बाद रोगियों को पुनर्वास में सहायता करे।

हम अक्सर देखते हैं कि ऑपरेशन के बाद अस्पताल की रुचि मरीज़ में कम हो जाती है और उन्हें सही जानकारी देने वाला कोई नहीं मिलता।

'मधुमेहवाणी' के द्वारा मधुमेह के मरीज़ों को दी जाने वाली जानकारी बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसे मैंने व्यक्तिगत महसूस किया है और मुझे पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका जिस भी मधुमेही के हाथ में पहुँचेगी उसे निश्चित ही लाभ होगा। इसे भविष्य में निरंतर प्रकाशित करते रहें, इन्हीं आशाओं के साथ।

– मनोहर मोटवानी, कानपुर

★ ★ ★

संपादक महोदय,

पिछला अंक मरीज़ों के लिये जानकारी से भरा था। हृदय रोग पर इतनी जानकारी एक साथ पढ़ने को मिली। यह कई मधुमेह रोगियों के लिये फायदेमंद साबित हुआ होगा।

मुझे डॉ. अनिल कपूर का मेटाबोलिक सिंड्रोम पर लेख बहुत अच्छा लगा। इसे पढ़कर कई लोग मधुमेह व हृदय रोग से बचने के उपाय कर पायेंगे। मैं तो कहूँगा कि यदि कोई मोटा व्यक्ति है और परिवार में डॉयबिटीज़ है तो उसे हमेशा सावधान रहना चाहिये।

मेथी दानों के उपयोग की वैज्ञानिक मान्यता है यह जानकर खुशी हुई। आगे भी ऐसी जानकारी देते रहेंगे और पत्रिका उन्नति करती रहेगी ऐसी शुभकामनाओं के साथ।

– नरेन्द्र सिंह गवली, हरदा